Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.gisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2023 GISRRJ | Volume 6 | Issue 4 | ISSN : 2582-0095

मूल्य आधारित शिक्षा और शिक्षक की भूमिका

डॉ0 गीता सिंह
प्राध्यापक अर्थशास्त्र
शासकीय कन्या स्नातकोत्तर, महाविद्यालय, **रीवा** (म0 प्र0)

Article Info
Volume 6, Issue 4
Page Number : 37-40
Publication Issue :
July-August-2023
Article History
Accepted : 01 July 2023
Published : 15 July 2023

सारांश– ''आज का शिक्षक मानवतावादी दृष्टिकोण वाला है, वह धर्म निरपेक्षता एवं समाजवाद को अपना रहा है। वह आज विद्यार्थी का मार्गदर्शक है शिक्षण व्यवसाय निःसंदेह एक आदर्श व्यवसाय है, इसलिये शिक्षक के उत्तरदायित्व, उसकी भूमिकाएं तथा उसके कार्य अधिक जिम्मेदारीपूर्ण है। आज की शिक्षा पद्धति में शिक्षक के स्वरूप की संकल्पना करे तो लगता है शिक्षक वर्तमान प्रचलित शिक्षण पद्धतियों तथा कार्यप्रणाली के साथ परवर्तित परिस्थितियों के अनुरूप भी अपने को बना रहा है, वह शिक्षक होने के नाते एक अच्छा मार्गदर्शक बनता है, यह शिक्षण में नई एवं सामयिक विधियां, नव प्रौद्योगिकी तथा यांत्रिकी उपकरणों का प्रयोग करता है वह प्रवेश प्रक्रिया, शिक्षा, मूल्यांकन तथा अभ्यास आदि में नव तकनीकी का प्रयोग भी करता है, शिक्षक विद्यार्थियों के मूल्यों का विकास तथा राष्ट्रीय एकता के विकास में भी भूमिका निभाता है। अत' प्राचीन समय की तुलना में आधुनिक शिक्षा पद्धति में शिक्षक बालकों के अधिक नजदीक है। आज का शिक्षक दोस्त, मित्र, सहयोगी सभी है और इसीलिये मूल्यों का निर्माण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।''
मुख्य शब्द– मूल्य, शिक्षा, शिक्षक, बालक, शिक्षण, आदर्श।

प्रस्तावना – मानव सृष्टि की सर्वोत्तम रचना है और प्रत्येक मनुष्य भिन्न–भिन्न होता है। मानव के आचार–विचार एक दूसरे से भिन्न होने के कारण ही वह अन्य प्राणी से शतशः मेल नहीं खाता। व्यक्तियों के जीवन मूल्यों में भिन्नता ही उसे दूसरों से अलग करता है। मुल्य विहीन मनुष्य के जीवन का उद्देश्य सुनिश्चित नहीं होता। मूल्य मानव के मूलभूत गुण है। सामाजिक वातावरण के साथ मनुष्य के संबंध को निर्धारण उसके मूल्यों पर निर्भर करता है।

मूल्य, शिक्षा हमारे अंदर नैतिक मूल्यों का विकास करता है, यह नैतिक मूल्यों को सीखने के साथ साथ हमारे व्यक्तित्व में भी विकास करती है। अमेरी मनोवैज्ञानिक लॉरेस कोहलबर्ग का मानना था कि बच्चों को एक ऐसे माहौल में रहने की जरूरत है जो दिन प्रतिदिन के संघषों की खुली और सार्वजनिक चर्चा के लिये अनुमति देता है।''

मूल्य, शिक्षा व्यक्तित्व विकास में सहायक है, यह विद्यार्थियों में गुणवत्ता निर्मित करता है। यह हमारे जीवन में अनुशासन लाता है, मूल्य शिक्षा विद्यार्थियों में समय के महत्व, खेल के महत्व को समझने में सहायक है।
मूल्य शिक्षा क्या है ?

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

मूल्य शिक्षा व्यक्तियों के व्यक्तित्व विकास पर ध्यान आकर्षित करता है ताकि उनका भविष्य संवर सके और विषम परिस्थितिों में आसानी से पार पाया जा सके, यह बच्चों को सामाजिक, नैतिक और लोकतांत्रिक कर्तव्यों को कुशलतापूर्वक करते हुये बदलते वातावरण से जुड़ने के लिये आवश्यक है।

- मूल्य शिक्षा व्यक्ति में ढंग सिखाता है और भाईचारे की भावना विकसित करता है।
- देश भक्ति की भावना विकसित करता है।
- धार्मिक सहिष्णुता को भी विकसित करता है।
- शारीरिक और भावनात्मक पहलुओं को विकसित करता है।

मूल्य शिक्षा की परिभाषा –
बरटोन के अनुसार – ''नैतिक विकास एवं संयुक्त घटना है न कि पृथक–पृथक प्रक्रिया।''
गुरू राजा के अनुसार – ''नैतिक मूल्यों का ज्ञान, अभिप्राय पूर्णता से प्रभावित होता है।''

मूल्य शिक्षा का महत्व – नैतिक शिक्षा मनुष्य के जीवन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है, इसकी शिक्षा मनुष्य के जन्म से शुरू हो जाती है सभी का सम्मान करना, हिंसा न करना, कभी झूठ न बोलना, सभी से प्रेम करना, लोगों की सहायता करना आदि कार्य मूल्य शिक्षा कहलाती है। एक ऐसी शिक्षा जिस पर चलकर मनुष्य को शांति और सफलता की ओर लेकर जाता है मूल्य शिक्षा कहलाता है।

- मूल्य शिक्षा व्यक्ति के जीवन में लक्ष्यों को प्राप्त करने और सफल होने के लिये मदद करता है।
- व्यक्ति की व्यक्तित्व को आकार देता है।
- छात्रों को जीवन के उद्देश्य को जानने में मदद करता है।
- चुनौतियों का सामना करने प्रतिस्पर्धा के लिये मजबूत बनाता है।
- यह चरित्र का निर्माण करता है।

मूल्य शिक्षा का उद्देश्य –

- मानसिक, भावनात्मक, शारीरिक और आध्यात्मिक पहलुओं के संदर्भ में बच्चों के व्यक्तित्व विकास के लिये दृष्टिकोण निश्चित करता है।
- एक अच्छे नागरिक मूल्यों में वृद्धि करता है।
- विद्यार्थियों को सामाजिक, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भाईचारे के महत्व को समझने में सहायक है।
- अच्छे शिष्टाचार और जिम्मेदारी सहकारिता का विकास करना।
- सोच और जीने के लोकतांत्रिक तरीके को बढ़ावा देना।
- विद्यार्थियों को नैतिक मूल्यों का सिखाना।

मूल्य शिक्षा के सिद्धांत –

- सहानुभूति
- समानता
- सभी का सम्मान
- स्वास्थ्य की देखभाल
- गहन सोच

मूल्य आधारित शिक्षा के प्रकार – स्कूल पाठ्यक्रम में मूल्य शिक्षा की आवश्यकता क्यों ? आधुनिक युग में हम मूल्यहीनता की ओर तेजी से बढ़ रहे हैं। सम्पूर्ण विश्व में जीवन मूल्यों में गिरावट बरकरार है, मानव समाज में

आतंकवाद, जातिवाद, रंगभेद, नक्सलवाद जैसे विचारधारायें समाज विघटित कर रही हैं। जो मानव के अस्तित्व, विद्यालय के वातावरण का प्रभाव छात्रों के जीवन पर सीधा पड़ता है, छात्र विद्यालय में जो देखता है सीखता है उसको अनुकरण करना प्रारंभ करता है। विशेषकर शिक्षक के व्यवहार उनके पहनावे, रहन–सहन, साज–सज्जा से प्रभावित हो वैसे ही अनुसरण करना प्रारंभ कर देते हैं।

विद्यार्थी में आदर्शों का निर्माण स्कूल से प्रारंभ होता है। स्कूल प्राथमिक पाठशाला है, हालाकि घर प्राथमिक पाठशाला है, बच्चों में घर में मूल संस्कार विकसित होते हैं, माता–पिता के व्यवहार, बातचीत करने का तरीका, सामाजिक संबंध, बहुत सी बातें सिखाता है लेकिन विद्यार्थी जब स्कूल में प्रवेश करता है, स्कूल के वातावरण का प्रभाव उस पर अधिक प्रभावशील होता है, इसलिये स्कूली पाठ्यक्रय में मूल्यों के पाठों को शामिल करके शिक्षक उन महत्वपूर्ण मूल्यों को मजबूत कर सकते हैं। जो उनके छात्र उम्मीद करते हैं। घर की परवरिश का दोहराव इस बात की अधिक सम्भावना बना सकता है कि बच्चे समझे कि अपने मूल्यों को पहचानना और उनके अनुसार जीवन जीना कितना महत्वपूर्ण है।

स्कूली पाठ्यक्रम में मूल्यों को शामिल करने के कई तरीके हैं, प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष पाठ में सामाजिक, भावनात्मक शिक्षा पाठ्यक्रम में शामिल किया जा सकता है जिससे छात्रों को आत्मसम्मान, जागरूकता, संबंध कौशल, भावना विनिमय और बहुत कुछ जीव कौशल के बारे में सिखाता है। विद्यालयों में ऐसे सार्वभौमिक मूल्य को अपनाना चाहिये जिन्हें हमें स्कूलों में पढ़ाने पर ध्यान देना चाहिये। अब प्रश्न उठता है सार्वभौमिक मूल्य क्या है, सार्वभौमिक मूल्य का तात्पर्य है ऐसे मूल्य जो व्यापक स्तर पर कायम किया जाये, जैसे दयालुता। दयालुता एक मजबूत कक्षा समुदाय भी बना सकती है जिसमें हर बच्चा शामिल महसूस करता है। यह सभी छात्रों को आत्मसात करने को प्रेरित करता है। **कृतज्ञता –** कृतज्ञता को महत्व देने और अभ्यास करने से बच्चों की भलाई में भी सुधार हो सकता है। कृतज्ञता बच्चों में जीवन की चुनौतियों के प्रति अधिक लचीला बनाता है।, इसी तरह दृढ़ता, आदर, ईमानदारी जेसे मूल्यों का विकास बच्चों को चरित्रवान बनाता है। इन मूल्यों के अनुसरण के पश्चात छात्र अपने स्वयं के मूल्यों को पहचानने लगता है और यही स्कूली पाठ्यक्रम में मूल्यों को शामिल करने की सफलता है। छात्रों के लिये यह महत्वपूर्ण है कि वे अपने मूल्यों को पहचाने। विशेषकर जब वे किशोरावस्था में प्रवेश कर रहे होते हैं। व्यक्तिगत मूल्य हम सभी के लिये मार्गदर्शक के रूप में काम कर सकते हैं।

मूल्य शिक्षा में शिक्षक की भूमिका –स्कूल में मूल्य शिक्षा शामिल करने का सबसे आसान तरीका है कि पाठ्यक्रम में मूल्य शिक्षा शामिल करने के बजाय शिक्षक अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन ईमानदारीपूर्वक करना प्रारंभ कर देवे तो विद्यार्थी में मूल्य निर्मित करना आसान हो जायेगा क्योंकि शिक्षक विद्यार्थी का मित्र तथा सहयोगी होने के कारण मार्गदर्शक होता है। साथ ही विद्यार्थियों में मूल्यों का विकास तथा राष्ट्रीय एकता के विकास में भी भूमिका निभाता है। गुरूकुल परम्परा में शिक्षक और विद्यार्थी के बीच में दूरियां थी किन्तु आज विद्यार्थी और शिक्षक काफी नजदीक हैं।

प्राचीन समय से ही शिक्षक समाज में आदर्श रहे हैं। समाज में आदर्श व्यक्तित्व के रूप में स्वीकारा जाता है और बालक के व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका है, आधुनिक शिक्षा पद्धति में शिक्षक, शिक्षक होने के साथ–साथ अभिभावक, निर्देशक, सहयोगी, सलाहकार तथा निर्णायक आदि अनेक भूमिकाओं का निर्वाह करता है और आज शिक्षक अनेक प्रकार से विद्यार्थी की मदद करने के लिये तत्पर है

शिक्षक विद्यार्थी का नेतृत्व करता है उसको सही दिशा निर्देश देता है और समाज और समाज के अनुसार अनेकानेक क्रियाओं का आयोजन किया जाता है। शिक्षक विद्यार्थी का सही दिशा निर्धारित करने में सहायक है। उसकी योग्यता, क्षमता का पता लगाकर उसके अनुसार उसे प्रेरित करता है। विद्यार्थी की कमियों को दूर करने का प्रयास भी करता है।

आज शिक्षक की अनेक भूमिकाये हैं –

1. विशेषज्ञ के रूप में भूमिका।
2. व्यावसायिक भूमिका।
3. शिक्षक की उप भूमिकायें।
4. अन्य संदर्भ में शिक्षक की भूमिका
    1. स्त्रोत के रूप में
    2. न्यायकर्ता
    3. विद्यार्थियों का प्रतिनिधित्व
    4. निर्णायक
    5. खोजी
    6. अभिभावक

सहायक मित्र एवं विश्वासपात्र– मूल्य शिक्षा पद्धति में शिक्षक को सामाजिक न्यायकर्ता की भूमिका निभानी पड़ती है, शिक्षक मूल्यों का निर्माण करता है, शिक्षक की भूमिका अद्वितीय है, आज सांस्कृतिक, सामाजिक, नैतिक, पारम्परिक, समाजवादी, वैज्ञानिक आधुनिक मूल्यों के संदर्भ में महत्वपूर्ण है।

समाज के आवश्यकतानुसार मूल्यों का निर्माण होना अति आवश्यक है। क्योंकि समय और समाज के आधार पर मूल्य परिवर्तित होते हैं। शिक्षा पद्धति में शिक्षक विद्यार्थियों में राष्ट्रीय भावना और सामूहिक हितों की ओर ध्यान आकर्षित कराता है। शिक्षक धर्म, जाति, क्षेत्र से अलग होता है और तभी वह अपने विद्यार्थियों से समान व्यवहार कर पायेगा और शिक्षक स्वयं समाज व राष्ट्र के नई परिस्थितियों से अवगत हो तभी छात्रों को उस उत्तरदायित्व का वहन करने योग्य बना पायेंगें। शिक्षक विद्यार्थियों को समाज एवं राष्ट्र से संबंधित सभी समस्याओं एवं उपलब्धियों से अवगत कराता है और उसका सामना करने योग्य बनाता है।

निष्कर्ष – मूल्य शिक्षा पद्धति में शिक्षक, निर्देशक, अभिभावक व पथ प्रदर्शक और सहायक की भूमिका अदा करता है। शिक्षक बालक की रूचियों के अनुसार शिक्षा की सामग्री का संकलन और प्रस्तुतीकरण करता है। साथ ही शिक्षण में नई एवं सामयिक विधियों एवं नव प्रौद्योगिकी तथा यांत्रिकी उपकरणों का प्रयोग करता है। शिक्षकों की भूमिका में सबसे पहली आवश्यकता यह भी है। बच्चों के स्थान, जाति, धर्म, संस्कृति आदि किसी भी आधार पर भेद न करे सबके साथ समान व्यवहार करे, उनके हृदय में देश के सभी क्षेत्रों, सभी जातियों, सभी धर्मों, सभी भाषाओं और उनके साहित्यों, सभी संस्कृतियों के प्रति उदार भाव हो तथा बच्चों के मूल्यों का विकास कर सके, इन सभी के द्वारा ही राष्ट्रीय एकता का विकास संभव है।

संदर्भ सूची –

1. सिंह, राजेन्द्र पाल (2011) ''तुलनात्मक शिक्षा के सिद्धांत'' जयपुर राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी
2. सक्सेना, एन.आर., स्वरूप (2012) ''उदीपमान भारतीय समाज में शिक्षा'' मेरठ, आर. लाल बुक डिपो
3. गुप्ता, मंजू (2007) ''आधुनिक शिक्षण प्रतिरूप'' नई दिल्ली के.एस.के. पाटिल शर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स
4. यादव, वीरेन्द्र सिंह (2013) ''भारतीय शिक्षा का बदलता परिदृश्य, चुनौतियां एवं समाधान की दिशाएं, नई दिल्ली, आयोग पब्लिकेसन्स
5. पाठक, आर0 पी0 (2010) ''आधुनिक भारतीय शिक्षा, समस्यायें एवं समाधान, नई दिल्ली कनिष्क पब्लिशर्स